Certificate

Name: RAJESH KUMAR Class : B.A - IInd

Roll No. : 200380 Enroll No. : KS200380

College : Pt. SUNDERLAL SHARMA (OPEN) UNIVERSITY CHHATTISGARH

This is certified to be the bonafide work of the student in

the..Laboratory

during the academic year 20 /20

No. of practicals certified..........................out of ....in the

subject of.................................

....

Teacher In-charge

....

Examiner's Signature

....

Principal

Date: ....

School Rubber Stamp

(N. B. : The candidate is expected to retain his / her jouenal till he / she passes in the subject

Index

Si. No.	Name of the Experiment	Page No.	Date of Experiment	Date of Submission	Remarks
01)	प्रयोग क्रमांक - 01 समाजमिति विधि द्वारा प्रयोज्य का अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण का अध्ययन करना।				
2)	प्रयोग क्र० - 02 व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण पर सूचना के प्रथम का प्रभाव।				
3)	परीक्षण क्रमांक - 01 अभिवृत्ति मापन (विवाह संबंध में अभिवृत्ति का मापन करना।				
4)	परीक्षण क्रमांक - 02 व्यावसायिक रुचि (प्रयोज्य की व्यावसायिक रुचि का मापन करना।				
5)	परीक्षण क्रमांक - 03 पारस्परिक संबंध (प्रयोज्य की पारस्परिक संबंध का मापन करना।				

Date .....

Expt. No. .....

Page No. .....

NAME - RAJESH KUMAR

ENROLL NO. - KS200380

ROLL NO. - 200380

SUBJECT - PSYCHOLOGY PRACTICAL

STUDY CENTER - GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA

REGIONAL - BILASPUR

champion®

Teacher's Signature .....

Date .....

Expt. No. ..... PRACTICAL NO. - 1st Page No. .....

"समाजमिति (Sociometry) द्वारा व्यक्ति का अध्ययन करना"

⇒ समस्या :-

समाजमिति द्वारा व्यक्ति के पसंद व ना-पसंद का अध्ययन कर पता लगाना कि समाज के कौन से सदस्य के साथ अन्तःक्रिया का प्रभाव पड़ता है या नही।

⇒ उपकल्पना :-

समाजमिति का मनुष्यों पर पसंद, अधिक पसंद एवं ना पसंद के रूप में प्रभाव पड़ेगा।

⇒ परिचय, समाजमिति (Sociometry) :-

समाजमिति द्वारा व्यक्ति को उसके समूह में उसके द्वारा विभिन्न व्यक्तिगत/सामाजिक सामूहिक परिस्थितियों में उसकी पसन्द एवं जिनके साथ वह अन्तःक्रिया करना पसन्द करता है उन व्यक्तियों के बारे में जानकारी मिलती है इसके द्वारा उस बड़े समूह के अन्तर्गत विभिन्न छोटे समूह के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। इसके साथ ही व्यक्ति के स्वयं की समाज समूह में स्थिति, उसके समूह के अन्य सदस्यों द्वारा पसन्द किये जाने का स्तर का भी पता लगता है समाजमिति द्वारा यह भी पता लगता है कि व्यक्ति किन व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया नही करना चाहता तो समाज के कौन से सदस्य उसके साथ अन्तः क्रिया नही करना चाहते।

champion

Teacher's Signature .....

⇒ **चर (Varriable) :-**

समाजमिति का मानसिक तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव में चर का भी एक अहम भूमिका होती है। यह मुख्यतः तीन प्रकार होते है।

i) स्वतंत्र चर – पुछे गए प्रश्न मानसिक तत्परता एवं पसंद।
ii) आश्रित चर – समाजमिति एवं प्रयोज्य की प्रतिक्रियाएँ।
iii) बाह्य चर – प्रकाश, ध्वनि, मौसमी स्थिति, स्वास्थ्य।

⇒ **प्रायोज्य परिचय :-**

	नाम	लिंग	शैक्षणिक योग्यता	आयु	परिवेश	व्यवसाय
1)	रमेश	M	Graduate	21	ग्रामीण	कृषक
2)	राजू	M	I.T.I	19	शहरी	बेरोजगार
3)	रामु	M	Diploma	23	शहरी	इंजिनियर
4)	सुरेश	M	BSC	25	ग्रामीण	आपरेटर
5)	उमा	M	B.Com	21	ग्रामीण	कृषक
6)	वेद	M	M.Com	26	ग्रामीण	मैनेजर
7)	ऊषा	F	B.E	27	शहरी	इंजिनियर
8)	अविनाश	M	B.Tech	29	शहरी	इंजिनियर
9)	स्वाति	F	M.A	24	शहरी	क्लर्क
10)	खुशबू	F	B.Lib	22	शहरी	बेरोजगार

⇒ **आवश्यक सामग्री :-**

प्रश्न पत्र, पेन, पेन्सिल, स्टेनशील, ग्राफ, घड़ी आदि

=> प्रयोगिक प्रक्रिया निर्देश (Instruction):-

a) प्रायोज्यो को एक शांत वातावरण कक्ष में बैठाकर पसंद नापसंद के बारे में समझाना

b) जब तक प्रयोग न हो जाए प्रयोज्य को शांत वातावरण में बैठाना।

c) प्रायोज्य को समय व निर्देश की पूर्ण जानकारी दिया जाना।

d) प्रायोज्य को यह स्वतंत्रता देना की वह अपनी ~~अप~~ पसंद के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र है वह किसी को भी पसंद, नापसंद करने का उसे पूरा हक है।

e) इन सभी कार्यों में किए कार्य, प्रायोज्य की सारी जानकारी गुप्त रखी जायेगी।

=> सावधानियाँ (Precaution):-

a) कक्षा में प्रकाश की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए।

b) शोरगुल, या कोई किसी भी प्रकार का अप्रिय ~~एक~~ ध्वनि से मुक्त कक्ष में ही प्रयोग करना चाहिए।

c) प्रायोज्य अपनी पसंद, नापसंद को व्यक्त करने की पूरी आजादी होनी चाहिए।

d) प्रायोज्य का पहुँच क्षेत्र में ऐसा कोई भी वस्तु न हो जिससे उसे प्रयोग में किसी प्रकार की परेशानी हो।

e) प्रायोज्य किसी प्रकार का इलेक्ट्रानिक डिवाइस का प्रयोग न करें।

f) प्रायोज्य को दिए गए शब्दो या अंको पूर्वज्ञान नही होना चाहिए।

Experiment
Name ....

⇒ प्रदत्त संग्रह :-

1) रमेश – A
2) राजु – B
3) रामु – C
4) सुरेश – D
5) उमा – E
6) वेद – F
7) कृपा – G
8) अविनाश – H
9) स्वाति – I
10) खुश्बु – J

→ प्रयोगात्मक अभिकल्प :-

व्यवस्था	प्रक्रिया
प्रश्न लिखे हुए 10 कागज की पर्चियों की व्यवस्था।	– समूह में पर्चियाँ देकर प्रति उत्तर लेने का कार्य।

Teacher's Signature ....

Date ....

Expt. No. .... Page No. ....

⇒ प्रयोज्य अभिकल्प :-

प्रायोज्य पर योजनाबद्ध किये गए, परिणाम भिन्न प्रदर्शित कीया जा सकता है अतः प्रयोज्यों के विभिन्न योजनाबद्ध तरिकों से प्रयोग में हिस्सा भागीदारी या परिणाम प्राप्त कर सकते है।

a) नियंत्रण स्थिति – नियंत्रण स्थिति में प्रायोज्यों को एक निश्चित समय दिया जाता है तत्पश्चात उनके द्वारा दिए गये उत्तर को जांच कर उन्हे अंक प्रदान किया जाता है।

जैसे– सबसे कम पसंद के लिए – 03 अंक

पसंद के लिए – 02 अंक

नापसंद के लिए – 01 अंक

⇒ वास्तविक प्रक्रिया या विधि (Method):-

a) निर्देशों से अवगत कराने के बाद प्रायोज्यों को यह बताया गया वह अब पूरी तरह से समाजमिति के प्रयोग के लिए तैयार है।

b) प्रयोग करने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रश्न पत्र थे जिनमें वो पसंद, नापसंद के विकल्प को चुन सकते, उनमे उनके सारे नाम व पता लिखे हुए थे

c) सारे प्रायोज्यों को प्रश्न पत्र कुछ समय के लिए दिया जाता था जिसे उस समय में पूरा करके उन्हे वापस जमा करना होता, यह समय आप 20 sec से 1 मिनट तक रख सकते है।

d) प्रश्न पत्र में प्रायोज्यों को पसंद, नापसंद और अधिक पसंद का चयन करना होता है जिसे नियंत्रित व उत्साहपूर्वक सम्पन्न किया गया।

champion Teacher's Signature ....

Experiment Name ....

प्रदत्त निरूपण :– प्रथम पसंद को 03 अंक
द्वितिय पसंद को 02 अंक
नापसंद को 01 अंक

	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J
A	02				03				03	01
B						02				
C			03					02	02	
D	02								03	01
E	01		02			01			03	
F	03						03		01	03
G				03				02		
H		02			01	01			02	
I				01			03		01	
J		02				03			02	01
Total	08	04	05	04	04	07	06	04	15	06

सबसे लोकप्रिय – I
दूसरी पसंद – A
एकांकी/नापसंद – H

Teacher's Signature ....

परिणाम :-

सर्वाधिक लोकप्रिय → I
दूसरी पसंद → A
सर्वाधिक एकांकी → H
म्युच्युअल रिलेशन → A ⇌ I
ट्राइएंगल रिलेशन → A – F – I
चेन रिलेशन → B – D – E – F – A – J – I

निष्कर्ष एवं व्याख्या :-

a) उपरोक्त परिणाम के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि समूह में सबसे लोकप्रिय सदस्य "I" अर्थात स्वाति है समूह की दूसरी पसंद "A" अर्थात रमेश है समूह में सबसे कम नापसंद "H" अर्थात अविनाश है जिसे किसी ने भी पसंद नही किया।

b) A ⇌ I अर्थात स्वाति और रमेश के मध्य परस्पर आपसी संबंध है अर्थात वे एक दूसरे से तालमेल बैठाकर एक-दूसरे को समझकर कार्य कर रहे हैं।

c) समूह मे A – F – I के मध्य त्रिकोणीय संबंध है

d) और समूह मे अनुरेश, उमा, वेद, रमेश, खुश्बु, स्वाति आपस मे एक चेन रिलेशन स्थापित करते हैं।

अन्तर्दर्शन रिपोर्ट :-

यह प्रयोग बहुत ही मजेदार था हमे अपनी पसंद व नापसंद बताने मे डर लग रहा था लेकिन जब प्रयोगकर्ता ने हमें विश्वास दिलाया कि हमारा उत्तर पूरी तरह गोपनीय रखा जाएगा तो हमने बेझिझक उत्तर लिख दिया।

—××—

Date .....

Expt. No. ..... PRACTICAL No. -2nd Page No. .....

"व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण पर सूचनाक्रम का प्रभाव"

⇒ **समस्या :-**

क्या सूचनाओं के क्रम का प्रभाव व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण पर पड़ता है।

⇒ **उपकल्पना :-**

लक्ष्य व्यक्ति के बारे में जिस तरह की सूचना व्यक्ति को पहले मिल जाती है, उसके बारे में वैसी ही छवि का निर्माण हो जाता है।

⇒ **परिचय / प्रस्तावना :-**

सामाजिक प्रत्यक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू व्यक्ति प्रत्यक्षण होता है व्यक्ति प्रत्यक्षण में किसी भौति - जागते व्यक्ति का प्रत्यक्षण होता है, किसी निर्जीव वस्तु का नहीं। अतः व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण हमारे उन अनुक्रियाओं को प्रभावित करता है, जिसके कारण हमारे प्रति उस व्यक्ति का व्यवहार भी प्रभावित होता है।

जब हम किसी अन्य व्यक्ति के सम्पर्क में आते हैं, तो जानने कि कोशिश करते हैं, कि वह दूसरा व्यक्ति कैसा है, उसकी मनोवृत्ति विचार आदि कैसा है, उसकी विशेषताएँ क्या है, उसे कौन - कौन सी चीजें अभिप्रेरित करती है? इत्यादि। दूसरे शब्दो में हम दूसरे व्यक्ति के बारे में एक विचार या छवि बनाते है, इस प्रक्रम को छवि निर्माण

champion

Teacher's Signature .....

Date ....

Expt. No. .... Page No. ....

कहा जाता है और इसे ही व्यक्ति प्रत्यक्षण के नाम से जाना जाता है।

— छवि निर्माण में सूचना संसाधन :-

समाज मनोविज्ञान के अध्ययनो से स्पष्ट हो गया है कि छवि निर्माण सूचनाओं से प्रभावित होता है जो किसी एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से प्राप्त होता है। सूचना प्राप्त करने वाला व्यक्ति इन सूचनाओं को भिन्न-भिन्न ढंग से संसोधित करता है और उसके आधार पर उस व्यक्ति के बारे में एक निश्चित छवि का निर्माण करता है इस प्रक्रिया मे आने वाले कारक प्रमुख है -

a) सूचना की बहुइकाईयाँ — प्राप्त सूचनाओं की विभिन्न ईकाइयों को आपस में मिलाकर व्यक्ति छवि का निर्माण करता है।

b) प्राप्त सूचना के क्रम — लक्ष्य व्यक्ति के बारे में जिस तरह की सूचना पहले प्राप्त होती है उसके बारे में उसी तरह की छवि का निर्माण होता है।

c) धनात्मक एवं ऋणात्मक सूचना — ऋणात्मक सूचनाएँ लक्ष्य व्यक्ति के बारे में छवि निर्माण में धनात्मक सूचनाओं की तुलना में अधिक प्रभावकारी होते है।

→ चर :-

स्वतंत्र चर :- सकारात्मक एवं नकारात्मक शीलगुणो की सूची।

आश्रित चर :- प्रयोज्य द्वारा दिए गए प्रत्योत्तर।

Teacher's Signature ....

champion

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

⇒ **प्रयोज्य का परिचय:-** नाम - राहुल वर्मा
उम्र - 25 वर्ष
लिंग - पुरुष
शैक्षणिक - I.T.I,
परिसर - शहरी

⇒ **आवश्यक सामाग्री:-** सकारात्मक तथा नकारात्मक शीलगुणों की सुची, फोटो, पेन, पेंसिल, पेपर, इत्यादि।

⇒ **प्रयोग पद्धिया:-** प्रयोगात्मक अभिकल्प

a) प्रथम अवस्था - फोटो दिखाते हुए सकारात्मक शीलगुणों को लिखने का कार्य (समय - 2 मिनट)
b) द्वितीय अवस्था - फोटो दिखाते हुए नकारात्मक शीलगुणों की सुची दिए गुणों को लिखने का कार्य (समय - 2 मिनट)

⇒ **सावधानियाँ:-**
a) प्रयोग के दौरान वातावरण शांत एवं नियंत्रित होना चाहिए।
b) प्रयोग के दौरान किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नही होने देना चाहिए।
c) पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए।
d) प्रयोज्य को सभी निर्देश अच्छी तरह दिए जाने चाहिए।
e) शीलगुणों की सुची सुपाठ्य एवं दिखाई जाने वाली फोटो साफ एवं स्पष्ट होनी चाहिए।

champion

Teacher's Signature .....

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

⇒ **निर्देश :-**

पहली अवस्था में मैं आपको एक जोड़ी दिखाऊंगा और इसके बाद आपको एक सूची पढ़ने को दूंगा जिसमें कुछ शीलगुण लिखे हुए हैं आपको सूची पढ़कर जोड़ी में दिख रहे व्यक्ति के बारे में सूची के शीलगुणों को लिखना है आपको लगे कि जो गुण उक्त व्यक्ति में ज्यादा है। उन्हे पहले लिखे। आपको यह कार्य दो मिनट तक करना है। दूसरी अवस्था में पुनः आपको जोड़ी एवं शीलगुणो की सूची दिखाई जाएगी। पहली अवस्था की तरह इस अवस्था में भी आपको शीलगुणों को २ मिनट तक लिखना है।

⇒ **वास्तविक प्रयोज्य प्रक्रिया :-**

प्रयोज्य को अच्छी तरह से निर्देश देकर प्रयोग प्रारंभ किया गया। सर्वप्रथम प्रयोज्य को एक जोड़ी दिखाई गई इसके पश्चात शीलगुणो की पहली सूची दिखाकर उक्त जोड़ी के लिए शीलगुणों को लिखने को कहा। प्रयोज्य द्वारा शीलगुण लिखने के बाद यही प्रक्रिया दूसरी अवस्था में दोहराई गई। दोनो अवस्था पूर्ण होने पर प्रयोज्य से रिपोर्ट लेकर धन्यवाद दिया गया।

⇒ **प्रदत्त संग्रह :-** दोनो अवस्थाओ में प्रयोज्य द्वारा बताए गए शीलगुण

प्रथम अवस्था	द्वितीय अवस्था
ईमानदार	ईमानदार
सच्चा	सच्चा
परिश्रमी	परिश्रमी
बुद्धिमान	साहसी

champion

Teacher's Signature .....

Experiment

Name .....

परिणाम तालिका

प्रथम अवस्था		द्वितीय अवस्था	
बताए गए सकारात्मक शीलगुण	बताए गए नकारात्मक शीलगुण	बताए गए सकारात्मक शीलगुण	बताए गए सकारात्मक शीलगुण
80%	0%	0%	80%

Teacher's Signature .....

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

प्रदत्त निरूपण :-

- प्रथम अवस्था में बताए गए सकारात्मक गुणों का प्रतिशत - $\frac{4}{5} \times 100 = 80\%$.
- प्रथम अवस्था में बताए गए नकारात्मक गुणों का प्रतिशत - $\frac{0}{5} \times 100 = 0\%$
- द्वितीय अवस्था में बताए गए सकारात्मक गुणों का प्रतिशत - $\frac{4}{5} \times 100 = 80\%$.
- द्वितीय अवस्था में बताए गए नकारात्मक गुणों का प्रतिशत - $\frac{0}{5} \times 100 = 0\%$.

⇒ **निष्कर्ष एवं व्याख्या :-**

प्राप्त परिणाम में यह देखा जा सकता है कि प्रयोज्य द्वारा प्रथम अवस्था में लक्ष्य व्यक्ति के सकारात्मक शीलगुण बताए गए और दूसरी और अवस्था में जबकी नकारात्मक शीलगुण पहले दिखाए गए फिर भी प्रयोज्य ने लक्ष्य व्यक्ति के सकारात्मक गुण ही बताए। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि प्रयोज्य लक्ष्य व्यक्ति के बारे में पहले से एक छवि निर्मित कर लिया, जो कि प्राथमिकी प्रभाव की वजह से हुआ अतः उस पर दूसरी अवस्था में नकारात्मक शीलगुणों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसे अभिनवता प्रभाव कहा जाता है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है, कि लक्ष्य व्यक्ति के बारे में जैसी सूचना पहले प्राप्त होती है उसके बारे में वैसी ही छवि का निर्माण होता है एवं इस पर सूचनाओं के क्रम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

⇒ **संदर्भ ग्रंथ :-**

सिंह, अरुण कुमार - समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा

champion

Teacher's Signature .....

Date ....

Expt. No. .... TEST NO. 01 Page No. ....

" अभिवृत्ती मापन "

⇒ **उद्देश्य :-**

परीक्षण प्रपत्र द्वारा प्रायोज्य की विवाह संबंधित अभिवृत्ती का मापन करना। प्रो. प्रमोद कुमार द्वारा निर्मित।

⇒ **परिचय :-**

"अभिवृत्ती किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के पश्चात उसके ज्ञान, दक्षता या प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता है" दूसरे शब्दो में, अभिवृत्ती से हमारा आशय व्यक्ति की उस तत्परता अथवा रुझान से है जो किसी पेशे या कार्य में भावी सफलता पाने हेतु आवश्यक होती है तथा जिसका प्रस्फुटन शिक्षा एवं अभ्यास के द्वारा होता है।

"An attitude is a characterstics or set of condition, that are symptomatic to the individuals ability to acquire with some specified training, some knowledge or skill or a set or responses in a given field. By Bingham.

⇒ अभिवृत्ती परीक्षण व्यक्ति की किसी विशेष प्रकार के कार्य को करने वाली बीजभूत योग्यता का मापन करते है।

⇒ अभिवृत्ती परीक्षण दो प्रकार के होते है।

a) सामान्य या विभेद अभिवृत्ती परीक्षण।

b) विशिष्ट क्षेत्रो में अभिवृत्ती परीक्षण।

CHAMPION® Teacher's Signature ....

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

⇒ **आवश्यक सामग्री :-**

प्रश्न प्रपत्र, पेन पेन्सिल, शांत कक्ष, घड़ी आदि।

⇒ **प्रायोज्य परिचय :-** अभिवृत्ति मापन जिस व्यक्ति पर किया गया।

नाम - अविनाश कुमार
शिक्षा - Agriculture (B. Tech)
संस्थान - कृषि विश्वविद्यालय रायपुर
आयु - 28 वर्ष
परिवेश - शहरी
व्यवसाय - Nil
विवाह - विवाहित

⇒ **प्रक्रिया :-**

अभिवृत्ति मापन के परीक्षण में निश्चित व्यक्ति को कक्ष में शांतिपूर्वक बैठाकर, समझाकर, उस पर अभिवृत्ति मापन का परीक्षण किया जाता है।

a) प्रायोज्य को सारे निर्देश प्रारंभ में ही बता दिया गया कि किस प्रकार मुख्य पृष्ठ सहित सारे प्रश्नो का उत्तर देना है।
b) परीक्षण प्रपत्र में कुल प्रश्नो की संख्या 38 है।
c) प्रायोज्य पर परीक्षण करते समय वैधता, विश्वनियता की पुरी जानकारी दी गई।
d) अंक निर्धारण की पुरी जानकारी प्रायोज्य को नही दी जानी है।
e) प्रायोज्य को सभी उत्तर में हाँ, नही स्पष्ट रूप से देना होगा।

champion

Teacher's Signature .....

Experiment

Name .....

सारणी :-

अभिवृत्ति	श्रेणी
धनात्मक	90 - 114
समान्य	65 - 89
ऋणात्मक	38 - 64

Teacher's Signature .....

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

⇒ निर्देश :—

a) प्रयोज्य द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तर हाँ, नहीं, एवं कटस्त को अंत में गणना करना।

b) प्रयोज्य द्वारा दिए गए उत्तरों में हाँ, नहीं, कटस्त में सबसे अधिक किस पक्ष में उत्तर दिए यह गणना करके आकलन करना।

c) यथा निर्देश प्रक्रिया का पालन किया गया किसी भी प्रकार की छेड़ नहीं किया गया एवं प्रपत्र को उत्तर देने के पश्चात यथावत लौटा दिया गया।

d) कृपया प्रयोज्य समस्त कथनों/प्रश्नों का सही उत्तर दें। उत्तर गुप्त रखा जाएगा।

⇒ गणना :-

प्रयोज्य द्वारा दिए उत्तर की गणना सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष में है जो इस प्रकार होगी।

सकारात्मक

हाँ के लिए = 03 अंक
कटस्त = 02 अंक
नहीं = 01 अंक

नकारात्मक

हाँ के लिए = 01 अंक
कटस्त = 02 अंक
नहीं = 03 अंक

champion

Teacher's Signature .....

Date ....

Expt. No. .... Page No. ....

⇒ सावधानियां :-

परीक्षण कक्ष में परीक्षक एवं प्रायोज्य ही रहे।

a) प्रायोज्य के बैठने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

b) परीक्षण कक्ष में प्रकाश की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

c) परीक्षण कक्ष में प्रायोज्य को सारे निर्देश को समझाना अनिवार्य।

d) परीक्षण पत्र भरवाने के कार्य सही समय पर करवाना।

e) परीक्षण के समय प्रायोज्य को किसी भी प्रकार से आलोचना व

f) किसी प्रकार से परेशान नही करना।

⇒ परिणाम :-

⇒ प्रायोज्य के हाँ, नहीं एवं तटस्थ (?) में दिए गए उत्तर का योग किया गया जो इस प्रकार है।

हाँ में दिए गए उत्तर - 20×3 = 60

नही में - 4×1 = 4

तटस्थ मे - 14×2 = 28

92

⇒ अंक के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रायोज्य की विवाह सम्बंध में अभिवृत्ति धनात्मक है जो हमें प्राप्त सारणी द्वारा ज्ञात हुई है प्रयोज्य ने सभी पर अलग-अलग मत दिए जिसका कुल अंक 92 प्राप्त हुआ। सारणी के अनुसार प्रयोज्य की मनोवृत्ति विवाह के संबंध में धनात्मक अभिवृत्ति परिणाम ~~प्रस्तुत~~ प्रस्तुत हो रहा है। अतः प्रयोज्य की वैवाहिक अभिवृत्ति की परिस्थिति सामान्य है।

— × × —

Teacher's Signature ....

champion

Date .....

Expt. No. ..... TEST NO-02nd Page No. .....

"व्यावसायिक रुचि"

⇒ उद्देश्य :-

प्रायोज्य की व्यावसायिक रुचि प्रपत्र द्वारा व्यावसायिक रुचि का मापन करना। प्रो. वी. पी. बंसल एवं प्रो. डी. एल. श्रीवास्तव द्वारा

⇒ परिचय :-

रुचि किसी अनुभव की ओर संलिप्त होने और संलग्न रहने की प्रवृत्ति है। किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया को पसंद करने, उसके प्रति ध्यान केन्द्रित करने तथा उनमें संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति को हम रुचि कहते हैं। इसका व्यक्ति की योग्यताओं एवं अभिक्षमताओं से कोई संबंध नहीं है। यह जन्मजात एवं अर्जित दोनों प्रकार की हो सकती है।

रुचि का अर्थ :-

साधारण शब्दों में रुचि से आशय किसी लक्ष्य वस्तु या प्रक्रिया के प्रति ध्यान केन्द्रित करना। जब कोई वस्तु अच्छी लगती है या पसन्द आती है, तो स्वभाविक रूप से हमारी रुचि उसके प्रति हो जाती है जिसके फलस्वरूप हम उस ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर लेते हैं।

- बिंघम के अनुसार" रुचि वह प्रवृत्ति है जो किसी अनुभव में लग जाती है तथा उसमें निरंतर होती है।

Teacher's Signature .....

champion®

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

- सुपर के अनुसार " रुचि कोई पृथक मनोवैज्ञानिक इकाई नहीं है बल्कि यह सम्पूर्ण मानव व्यवहार का एक पक्ष है।

- गिलफोर्ड के अनुसार " किसी वस्तु व्यक्ति या क्रिया से आकर्षित होने, उसे पसन्द करने या उसमें संतुष्टि पाने के ओर ध्यान केन्द्रित करने वाली प्रवृत्ति को रुचि कहते हैं।

⇒ **रुचि परीक्षण के प्रकार :-**

a) व्यावसायिक रुचि-मापन, जो व्यक्ति के विशिष्ट व्यवसाय में रुचि का मापन करती है।

b) अव्यावसायिक रुचि-मापन या सामान्य रुचि मापन जो व्यक्ति के सामान्य जीवन की रुचियों का मापन करती है।

⇒ **आवश्यक सामाग्री :-**

प्रो. वी. पी. बंसल तथा प्रो. डी. एन श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व्यावसायिक रुचि प्रपत्र, मैन्युअल, पेन, पेन्सिल आदि

⇒ **प्रयोज्य परिचय :-**

नाम - विनय सिंह
लिंग - पुरुष
आयु - 25 वर्ष
शैक्षिक योग्यता - एम.ए.
परिसर - शहरी

champion

Teacher's Signature .....

Experiment

Name .....

⇒ विभिन्न क्षेत्रों में व्यावसायिक रुचि का नाम

a)	AC	कृषि के क्षेत्र में
b)	AR	कला के क्षेत्र में
c)	CO	वाणिज्य क्षेत्र
d)	EX	प्रबंधन क्षेत्र
e)	MH	घरेलू कार्य क्षेत्र
f)	LI	साहित्य क्षेत्र
g)	SC	विज्ञान क्षेत्र
h)	SO	सामाजिक क्षेत्र

Teacher's Signature .....

Date ....

Expt. No. .... Page No. ....

सावधानियाँ :-

a) परीक्षण पूर्व प्रयोज्य से सौहार्द पूर्वक संबंध स्थापित करें।

b) वातावरण शांत एवं प्रकाश की उचित व्यवस्था हो।

c) प्रयोज्य मनोविज्ञान का छात्र नही होना चाहिए।

d) परीक्षण के समय प्रयोज्य किसी अन्य व्यक्ति से या किसी भी अनर्गल वार्तालाप नही करना चाहिए।

निर्देश :-

प्रस्तुत रुचि प्रपत्र के दो खाने में दो व्यवसाय दर्शाये गये है, प्रयोज्य को अपनी रुचि का प्रदर्शन प्रत्येक खाने में अपने पसंद के व्यवसाय में (✓) सही का निशान लगाकर चुनना है यदि प्रयोज्य को किसी खाने के दोनो व्यवसाय पसंद हो तो वह दोनो का चुनाव कर सकता है इसी प्रकार यदि किसी खाने पर कोई भी व्यवसाय पसंद न हो तो उन्हे खाली छोड़ दे। कठिनाई होने या असहज महसूस होने पर या कोई कठिनाई आ रही हो तो प्रयोज्य निःसंकोच परीक्षणकर्ता से पूछ सकता है।

प्रक्रिया :-

सर्वप्रथम हमने प्रयोज्य को शांतिपूर्वक प्रयोगशाला में बैठाकर सौहार्दपूर्ण सम्बंध बनाए, तत्पश्चात परिक्षण के निर्देश प्रयोज्य को समझाए। परीक्षण की समाप्ती पर हमने प्रयोज्य को धन्यवाद देकर विदा किया।

Experiment

Name .....

→ विभिन्न क्षेत्रों में व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक ग्राफ :-

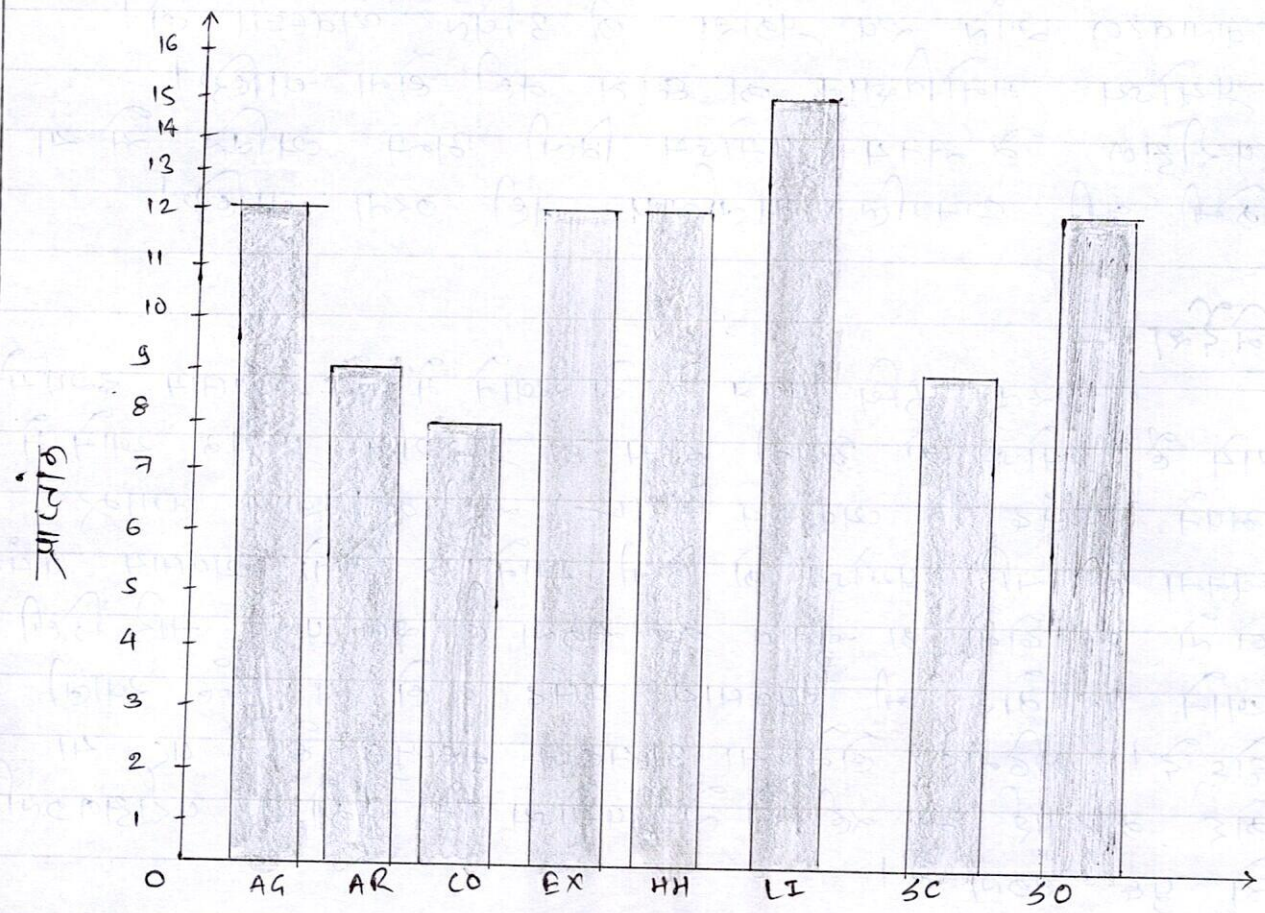

Teacher's Signature .....

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

⇒ गणना :-

प्रस्तुत प्रपत्र एक 8×8 का वर्ग है, प्रत्येक खाने में प्रथम विकल्पों का योग ऊपर से नीचे तथा द्वितीय विकल्पों का योग दायें से बाये किया जायेगा तथा अंक को जोड़ दिया जायेगा। दिए गए सूत्र के अनुसार-

जैसे - $AG = AG_1 + AG_2$

अंत में सभी क्षेत्रों में प्राप्त प्राप्तांको की तुलना कर यह ज्ञात किया जा सकता है कि प्रयोज्य की रुचि किस क्षेत्र में है।

⇒ परिणाम एवं विवेचना :-

प्रस्तुत प्रपत्र प्रयोज्य के विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के प्रति अपने सुझाव की सीमा का मापन है। जो क्रमशः कृषि, कला, वाणिज्य, प्रबंधन, घरेलु कार्य, साहित्य, विज्ञान तथा सामाजिक क्षेत्र में व्यवसाय के ये आठ प्रकार प्रपत्र में दिए गये है जिसकी सहायता से हमने प्रयोज्य के रुचि का मापन किया और इसकी सहायता से हम प्रयोज्य को बता सकते है कि वह किस क्षेत्र में रुचि रखता है

AG_1 -	5	AG_2 -	7	AG -	12
AR_1 -	3	AR_2 -	6	AR -	9
CO_1 -	2	CO_2 -	6	CO -	8
EX_1 -	7	EX_2 -	5	EX -	12
MM_1 -	5	MM_2 -	7	MM -	12
LI_1 -	8	LI_2 -	7	LI -	15
SC_1 -	6	SC_2 -	3	SC -	9
SO_1 -	8	SO_2 -	4	SO -	12

xxx

champion

Teacher's Signature .....

Date ....

Expt. No. .... Page No. ....

- इस प्रकार प्रयोज्य को सर्वाधिक अंक "15" साहित्य के क्षेत्र में प्राप्त हुआ है बाकि अन्य क्षेत्र मे कृषि, कला, वाणिज्य, प्रबंधन विज्ञान क्षेत्र में क्रमशः 12, 9, 8, 12, 12, 9, 12 अंक प्राप्त हुआ।

⇒ **निष्कर्ष :-**

प्रयोज्य द्वारा प्राप्त प्राप्तांको से स्पष्ट है, कि प्रयोज्य की रुचि विज्ञान के क्षेत्र में अधिक है, अतः प्रयोज्य को विज्ञान क्षेत्र में व्यवसाय का चुनाव करना चाहिए, ताकि प्रयोज्य इस क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर सके।

——— xxx ———

champion®

Teacher's Signature ....

Date ....

Expt. No. .... TEST NO. - 3rd Page No. ....

" पारस्परिक संबंध "

→ **उद्देश्य :-**

डॉ. गुरु प्यारी माथुर द्वारा निर्मित पारस्परिक संबंध मापन प्रपत्र की सहायता से प्रयोज्य की पारस्परिक संबंध का मापन करना।

→ **परिचय :-**

पारस्परिक संबंध की अवधारणा में दो या दो से अधिक लोगो के बीच सामाजिक जुड़ाव, संबंध या संबद्धता शामिल है पारस्परिक संबंध उनकी अंतरंगता या संबद्धता या आत्म-प्रकटीकरण की डिग्री में भिन्न होते है लेकिन उनकी अवधि में, उनकी पारस्परिकता में उनके महसुस feeling में कुछ को नाम देने केलिए। संदर्भ परिवार या रिश्तेदारी संबंधो, दोस्ती, विवाह, सहयोगी के साथ संबंध के क्लब, पड़ोस पुजा स्थलो से भिन्न हो सकता है। पारस्परिक संबंध सामाजिक स्थितियों में लोगो की एक दुसरे के साथ बातचीत से बनते है

- **फ्रेनेमी के अनुसार :-** एक व्यक्ति जिसके साथ एक अन्य व्यक्ति अंतर्निहित संघर्ष के बावजूद मैत्रीपुर्ण संपर्क बनाए रखता है, संभवत:, प्रतिद्वंदिता, अविश्वास, ईर्ष्या या प्रतिस्पर्धा को शामिल करता है

- **प्रकार :-** a) अंतरंग संबंध b) वैवाहिक संबंध c) परिवारिक संबंध

CHAMPION® Teacher's Signature ....

⇒ **आवश्यक सामाग्री :-**

डॉ गुरु प्यारी माथुर द्वारा निर्मित पारस्परिक संबंध प्रपत्र, पेन, पेन्सिल, कक्षा आदि।

⇒ **प्रयोज्य परिचय :-**

	नाम	लिंग	शैक्षणिक	आयु	परिवेश
1)	अविनाश	M	B.E	28	शहरी
2)	वेद	M	B.Com	27	ग्रामीण
3)	अमित	M	B.E	27	शहरी
4)	नेहा	F	M.Sc	26	शहरी
5)	ऊषा	F	B.E	26	ग्रामीण
6)	मेघा	F	M.Com	24	शहरी
प्रयोज्य-	चन्द्रकांतयादव	M	B.E	29	शहरी

⇒ **निर्देश :-**

प्रपत्र भरते समय निम्न बातों का ध्यान रखें आप अपनी कक्षाओं में सभी छात्र/छात्राओं से परिचित है अपनी कक्षा में सभी उपस्थित अनुपस्थित छात्राओं को ध्यान मे रखकर करें।

a) इस परिक्षण में तीन खण्ड दिए गए है आपको तीनो खण्डों के उत्तर देने है।

b) प्रत्येक प्रश्न पत्र के उत्तर में आप प्राथमिकता के आधार पर तीन-तीन छात्र/छात्राओ के नाम लिख लिजिए। पहले आप अपनी पसंद के तीन छात्र/छात्राओं के नाम तथा बाद में उन छात्र छात्राओ का नाम, अधिक व कम क्रमानुसार, जो किसी से

Date ....

Expt. No. .... Page No. ....

- जो किसी से बातचीत व साथ कार्य करना पसन्द करता/करती है तथा अकेले रहता/रहती है।

c) आप बिना किसी दूसरे से सहयोग प्राप्त किये गए कार्य लिखिए।

d) वैयक्तिगत विभिन्नता के कारण कुछ लोग ही सहर्ष मित्रता पसन्द करते है कुछ स्वभाव से ही उदासीन रहना पसन्द करते है।

e) इस प्रश्नावली का उद्देश्य यह जानना है कि आप अपनी कक्षा (विभाग) के किन छात्रों/छात्राओं को पसन्द करते/करती है तथा कौन से छात्र/छात्राओ एकांकी रहना पसन्द करते है।

⇒ **प्रक्रिया :-**

सर्वप्रथम हमने प्रयोज्य को शांतिपूर्वक प्रयोगशाला में बैठाकर सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए, तत्पश्चात परिक्षण के निर्देश प्रयोज्य को समझाएं। परिक्षण की समाप्ति पर हमने प्रयोज्य को धन्यवाद देकर विदा किया।

⇒ **गणना :-**

प्रस्तुत प्रपत्र में तीन खण्ड दिए हुए है जिनमे हर खण्ड मे दो-दो विभाग है इन्हे चुनने के लिए तीन-तीन छात्र/छात्राओ का चयन करना है। तत्पश्चात खण्ड मे दिए गए प्रश्नो के आधार पर पर तथा प्राथमिकता के अनुसार उन छात्रों का नाम लिखेंगे।

तत्पश्चात अन्त में सभी खण्ड के अंक को योग करेंगे। और पता करेंगे की कौन कौन सी प्रवृत्ति का छात्र है तथा प्रयोज्य की रुचि किस संबंध में है।

champion® Teacher's Signature ....

Date ....

Expt. No. .... Page No. ....

⇒ परिणाम एवं विवेचना :-

प्रस्तुत प्रपत्र प्रयोज्य के विभिन्न पारस्परिक संबंध के क्षेत्रो के प्रति मापन किया गया। जो क्रमशः तीन खण्डो में दिया है। कार्य करने के लिए, खेलने व मनोरंजन के लिए, साथ बैठने के लिए।
इन सभी क्षेत्रो में किए गए मापन में जो क्रमानुसार व प्राथमिकतानुसार जिनका नाम है खण्ड-1 (कार्य करने के लिए)
विभाग-अ में प्रथम - नेहा, द्वितीय - अविनाश एवं अंतिम ऊषा है
विभाग-ब में प्रथम - नेहा, द्वितीय - मेधा एवं अंतिम वेद है तथा इसी प्रकार
खण्ड - 2 (खेलने व मनोरंजन के लिए) किए गए मापन के नाम में
विभाग - अ मे प्रथम नाम - नेहा, द्वितीय - मेधा एवं अंतीम - ऊषा है
विभाग - ब मे प्रथम नाम - अमित, द्वितीय - अविनाश, अंतिम - वेद है तथा अंतिम
खण्ड - 3 (साथ बैठने के लिए) किए गए मापन के नाम मे
विभाग - अ में प्रथम - नेहा, द्वितीय - मेधा, तृतीय अंतिम - अविनाश है
विभाग - ब में प्रथम - अमित, द्वितीय - वेद, तृतीय - ऊषा है

⇒ निष्कर्ष :-

प्रयोज्य द्वारा प्राप्त प्राप्तांको से स्पष्ट है कि प्रयोज्य की पसंद स्थान पर नेहा, द्वितीय नाम - मेधा एवं अंतिम पसंद ऊषा है अतः प्रायोज्य को उन्ही चुने हुए साथीयों के साथ रहना चाहिए जिसे वो चुने है जिससे उनकी संबंध अच्छी एवं भविष्य सुखमय स्थिति प्राप्त हो सके।

———xxx———

Teacher's Signature ....

CHAMPION®